**vks…e~**

**^bZ”oj }kjk fn;k x;k Kku dsoy osn gS vU; ugha % Lokeh J)kuUn\***

**izLrqrdrkZ&eueksgu dqekj vk;Z] nsgjknwuA**

nsgjknwu fLFkr Jhen~ n;kuUn vk’kZ T;ksfrZeB xq#dqy ds okf’kZdksRlo esa 3 twu ds vijkUg ds l= esa osn osnkax lEesyu vk;ksftr fd;k x;kA bls lEcksf/kr djrs gq, lqizfl) fo}ku Lokeh J)kuUn] vkpk;Z xq#dqy] xkser&vyhx<+ us dgk fd egf’kZ n;kuUn ds vk xeu ls iwoZ okxekxhZ osnksa dks xM+fj;ksa ds xhr crkrs FksA lekt esa cky fookg o vusd dqjhfr;ka izpfyr FkhA bu dqjhfr;ksa ds ckjs esa tc yksxksa ls iwNk tkrk Fkk rks og dgrs Fks fd ,slk djuk osnksa esa fy[kk gSA ;fn dksbZ cky fookfgr fo/kok gks tkrh Fkh rks lekt }kjk mls lrh gksus ds fy, foo”k fd;k tkrk FkkA gekjs ikSjkf.kd fo}ku dgk djrs Fks fd xkses?k] vtkes?k] v”oes?k o ujes?k ;Kksa dh vkKk osnksa esa gSA egkRek cq) us tc ;Kksa esa dh tkus okyh fgalk ls O;fFkr gksdj ;kfKdksa ls iz”u fd;s rks mUgsa mRrj feyk fd ,sls ;Kksa dks djus dk osnksa esa fo/kku gSA ;g lqudj egkRek cq) cksys fd eSa ,sls osnksa dks] ftlesa i”kq fgalk dh vkKk gks] ugha ekurkA fo}ku oDrk us egkRek cq) th ds vtkr”k=q ds ikl tkus o muls okrkZyki dh dFkk lqukbZA mUgksaus vtkr”k=q ls iz”u fd;k fd rqe ;Kksa esa Ik”kq fgalk D;ksa djrs gks\ mudks fn;s x;s mRrj ls lger u gksus ij egkRek cq) us vtkr=q dks ,d frudk fn;k vkSj dgk fd blds nks VqdM+s dj nksA fQj mUgksaus mu nks VqdM+ksa dks tksM+dj ,d VqdM+k djus dks dgkA vtkr”k=q us mu rks VqdM+ksa dks tksM+us esa viuh vleFkZrk crkbZA bl ij egkRek cq) cksys fd ;fn rqe VqVs gq, dks tksM++ ugha ldrs rks rksM+rs D;ksa gks\ vtkr “k=q muds rdksZa ls izHkkfor gqvk vkSj mlus ;K ds lHkh Ik”kqvksa HksM o cdfj;ksa dks eqDr dj fn;kA **Lokeh J)kuUn th us dgk fd ;fn egkRek cq) osn i<+s gq, gksrs rks lekt dk dY;k.k gksrkA osnksa ds ;FkkFkZ Lo#i ls vufHkK egkcq) ukfLrd cu x;s ftlls ns”k dk uqdlku gqvkA**

Lokeh J)kuUn us \_f’k n;kuUn dh ppkZ dj muds dk;ksZa ij izdk”k Mkyk vkSj dgk fd \_f’k n;kuUn us osnksa dk v/;;u dj mlds ;FkkFkZ Lo#i dk Kku izkIr fd;kA mUgksaus dgk fd ikSjkf.kd iafMrksa o fo}kuksa us osnksa dk ;FkkFkZ Lo#i tkus fcuk gh ;Kksa esa Ik”kqvksa dh fgalk dk izpkfjr fd;k ijUrq vkt egf’kZ n;kuUn th dh d`ik ls vf/kdka”k ikSjkf.kd ekU;rk;sa vlR; o O;FkZ fl) gqbZa gSaA **Lokeh th us Jksrkvksa dks dgk fd gesa osnkuqdwy vk;Z fopkj/kkjk okys ifjokjksa dk fuekZ.k djuk pkfg;sA** Lokeh th us Lokeh n;kuUn ds “kCnksa dks Hkh izLrqr fd;k fd pkj osn bZ”ojh; Kku gSa o lc lR; fo|kvksa dh iqLrd gSaA mUgksaus dgk fd euqLe`fr ds iz.ksrk egkjkt euq ds vuqlkj osn /keZ dk ewy gSA osn lkEiznkf;d Kku ugha gSA osnksa dk Kku euq’;d`r u gksdj bZ”ojd`r Kku gSA bu oSfnd fl)kUrksa dk Lokeh J)kuUn us foLrkj ls o.kZu fd;kA **Lokeh J)kuUn th us vkxs dgk fd ijekRek o vkRek ds lR; Lo#i dks tkus fcuk thokRek dh eqfDr ugha gksrhA** thokREkk deZ djus esa LorU= gS rFkk Qy Hkksxus esa ijrU= vFkkZr~ bZ”ojh; O;oLFkk ds v/khu gSA mUgksaus dgk fd osnksa dh vkKkvksa dk ikyu u djus ok mlds fo#) vkpj.k djus ls n.M feyrk gSA ijekRek us osnksa dk Kku l`f’V ds vkjEHk esa fn;k FkkA mUgksaus crk;k fd osn Kku] fopkj] ykHk vkSj lRrk ls ;qDr gSaA **Lokeh th us ;g Hkh crk;k fd bZ”oj }kjk fn;k x;k Kku dsoy osn gh gSa vU; ughaA** osn ls brj lHkh /kkfeZd xzUFkksa dks mUgksaus lkEizkfn;d xzUFk crk;kA Lokeh th us dgk fd osn esa nks izdkj dh ckrsa gSa izFke fo/ks; o nwljh fu’ks/kA mUgksaus dgk fd ukxfjdksa dks lafo/kku ds fo#) dk;Z djus ij n.M feyrk gSA blh izdkj osn dh vogsyuk djus ij Hkh bZ”ojh; O;oLFkk ls n.M feysxkA **oSfnd vkKkvksa dk ikyu ;fn ugha djsaxs rks gesa vxyk tUe euq’; dk ugha feysxkA**

Lokeh th us dgk fd osnksa esa ;K djus dk mins”k fn;k x;k gSA osn lHkh euq’;ksa dks lR; cksyuk o lR;kpj.k djuk fl[kkrk gSA **osn lEer xq#dqyh; f”k{kk iz.kkyh ns”k esa pysxh rks fo|k dh j{kk gksxhA** Lokehth us dgk fd osn esa ijk o vijk nks izdkj dh fo|k;sa gaSA bUgsa vk/;kfRed o HkkSfrd Kku ds :Ik esa Hkh tkuk tkrk gSA Lokeh th us lHkh Jksrkvksa dks osnksa dk Lok/;k; djus dh izsj.kk dhA Lokeh J)kuUn th us dgk fd ;fn dksbZ O;fDr ijk o vijk fo|kvksa dh [kkst djuk pkgs rks mlds fy, osn ije izek.k gSaA osn Lor% izek.k gaS ftldh iqf’V ds fy, vU; izek.kksa dh vko”;drk ugha gksrh tcfd osn ls brj vU; lHkh xzUFk ijr% izek.k dh dksfV esa vkrs gSa ftlds fy, osn vkfn xzUFkksa ds izek.kksa dh vko”;drk gksrh gSA Lokehth us dgk fd euqLe`fr ds v/;;u o lRiq#’kksa ds vkpj.k dks ns[kdj Hkh lR; o lnkpj.k dk fu.kZ; fd;k tk ldrk gSA tks ckr vkRek dks fiz; yxrh gS og Hkh lR; gks ldrh gSA Lokeh th us pkj osnksa ds miosnksa dh ppkZ dj crk;k fd vk;qosZn] /kuqosZn] xkU/koZ osn vkfn miosn gSaA gesa osnksa dk fuR; izfr Lok/;k; djuk pkfg;sA Lokeh th us T;ksfr’k dh ppkZ dj [kxksy T;ksfr’k dks mi;ksxh crk;k vkSj Qfyr T;ksfr’k dk [k.Mu fd;kA vius O;k[;ku dks fojke nsrs gq, mUgksaus dgk fd gesa xzgksa ds izHkko ls ugha vfirq vius deksZa ls lq[k o nq%[kksa dh izkfIr gksrh gSA

**izLrqrdrkZ&&eueksgu dqekj vk;Z**

**irk% 196 pqD[kwokyk&2**

**nsgjknwu&248001**

**Qksu% 9412985121**

**ओ३म्**

**‘ईश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान केवल वेद है अन्य नहीं: स्वामी श्रद्धानन्द’**

**प्रस्तुतकर्ता-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

देहरादून स्थित श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योर्तिमठ गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में 3 जून के अपरान्ह के सत्र में वेद वेदांग सम्मेलन आयोजित किया गया। इसे सम्बोधित करते हुए सुप्रसिद्ध विद्वान स्वामी श्रद्धानन्द, आचार्य गुरुकुल गोमत अलीगढ़ ने कहा कि महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व वागमार्गी वेदों को गड़रियों के गीत बताते थे। समाज में बाल विवाह व अनेक कुरीतियां प्रचलित थी। इन कुरीतियों के बारे में जब लोगों से पूछा जाता था तो वह कहते थे कि ऐसा करना वेदों में लिखा है। यदि कोई बाल विवाहित विधवा हो जाती थी तो समाज द्वारा उसे सती होने के लिए विवश किया जाता था। हमारे पौराणिक विद्वान कहा करते थे कि गोमेघ, अजामेघ, अश्वमेघ व नरमेघ यज्ञों की आज्ञा वेदों में है। महात्मा बुद्ध ने जब यज्ञों में की जाने वाली हिंसा से व्यथित होकर याज्ञिकों से प्रश्न किये तो उन्हें उत्तर मिला कि ऐसे यज्ञों को करने का वेदों में विधान है। यह सुनकर महात्मा बुद्ध बोले कि मैं ऐसे वेदों को, जिसमें पशु हिंसा की आज्ञा हो, नहीं मानता। विद्वान वक्ता ने महात्मा बुद्ध जी के अजातशत्रु के पास जाने व उनसे वार्तालाप की कथा सुनाई। उन्होंने अजातशत्रु से प्रश्न किया कि तुम यज्ञों में पशु हिंसा क्यों करते हो? उनको दिये गये उत्तर से सहमत न होने पर महात्मा बुद्ध ने अजातत्रु को एक तिनका दिया और कहा कि इसके दो टुकड़े कर दो। फिर उन्होंने उन दो टुकड़ों को जोड़कर एक टुकड़ा करने को कहा। अजातशत्रु ने उन तो टुकड़ों को जोड़ने में अपनी असमर्थता बताई। इस पर महात्मा बुद्ध बोले कि यदि तुम टुटे हुए को जोड़़ नहीं सकते तो तोड़ते क्यों हो? अजात शत्रु उनके तर्कों से प्रभावित हुआ और उसने यज्ञ के सभी पशुओं भेड व बकरियों को मुक्त कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा कि यदि महात्मा बुद्ध वेद पढ़े हुए होते तो समाज का कल्याण होता। वेदों के यथार्थ स्वरुप से अनभिज्ञ महाबुद्ध नास्तिक बन गये जिससे देश का नुकसान हुआ।

स्वामी श्रद्धानन्द ने ऋषि दयानन्द की चर्चा कर उनके कार्यों पर प्रकाश डाला और कहा कि ऋषि दयानन्द ने वेदों का अध्ययन कर उसके यथार्थ स्वरुप का ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि पौराणिक पंडितों व विद्वानों ने वेदों का यथार्थ स्वरुप जाने बिना ही यज्ञों में पशुओं की हिंसा का प्रचारित किया परन्तु आज महर्षि दयानन्द जी की कृपा से अधिकांश पौराणिक मान्यतायें असत्य व व्यर्थ सिद्ध हुईं हैं। स्वामी जी ने श्रोताओं को कहा कि हमें वेदानुकूल आर्य विचारधारा वाले परिवारों का निर्माण करना चाहिये। स्वामी जी ने स्वामी दयानन्द के शब्दों को भी प्रस्तुत किया कि चार वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं व सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। उन्होंने कहा कि मनुस्मृति के प्रणेता महाराज मनु के अनुसार वेद धर्म का मूल है। वेद साम्प्रदायिक ज्ञान नहीं है। वेदों का ज्ञान मनुष्यकृत न होकर ईश्वरकृत ज्ञान है। इन वैदिक सिद्धान्तों का स्वामी श्रद्धानन्द ने विस्तार से वर्णन किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आगे कहा कि परमात्मा व आत्मा के सत्य स्वरुप को जाने बिना जीवात्मा की मुक्ति नहीं होती। जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है तथा फल भोगने में परतन्त्र अर्थात् ईश्वरीय व्यवस्था के अधीन है। उन्होंने कहा कि वेदों की आज्ञाओं का पालन न करने वा उसके विरुद्ध आचरण करने से दण्ड मिलता है। परमात्मा ने वेदों का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में दिया था। उन्होंने बताया कि वेद ज्ञान, विचार, लाभ और सत्ता से युक्त हैं। स्वामी जी ने यह भी बताया कि ईश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान केवल वेद ही हैं अन्य नहीं। वेद से इतर सभी धार्मिक ग्रन्थों को उन्होंने साम्प्रादियक ग्रन्थ बताया। स्वामी जी ने कहा कि वेद में दो प्रकार की बातें हैं प्रथम विधेय व दूसरी निषेध। उन्होंने कहा कि नागरिकों को संविधान के विरुद्ध कार्य करने पर दण्ड मिलता है। इसी प्रकार वेद की अवहेलना करने पर भी ईश्वरीय व्यवस्था से दण्ड मिलेगा। वैदिक आज्ञाओं का पालन यदि नहीं करेंगे तो हमें अगला जन्म मनुष्य का नहीं मिलेगा।

स्वामी जी ने कहा कि वेदों में यज्ञ करने का उपदेश दिया गया है। वेद सभी मनुष्यों को सत्य बोलना व सत्याचरण करना सिखाता है। वेद सम्मत गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली देश में चलेगी तो विद्या की रक्षा होगी। स्वामीजी ने कहा कि वेद में परा व अपरा दो प्रकार की विद्यायें हैं। इन्हें आध्यात्मिक व भौतिक ज्ञान के रूप में भी जाना जाता है। स्वामी जी ने सभी श्रोताओं को वेदों का स्वाध्याय करने की प्रेरणा की। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति परा व अपरा विद्याओं की खोज करना चाहे तो उसके लिए वेद परम प्रमाण हैं। वेद स्वतः प्रमाण हैं जिसकी पुष्टि के लिए अन्य प्रमाणों की आवश्यकता नहीं होती जबकि वेद से इतर अन्य सभी ग्रन्थ परतः प्रमाण की कोटि में आते हैं जिसके लिए वेद आदि ग्रन्थों के प्रमाणों की आवश्यकता होती है। स्वामीजी ने कहा कि मनुस्मृति के अध्ययन व सत्पुरुषों के आचरण को देखकर भी सत्य व सदाचरण का निर्णय किया जा सकता है। जो बात आत्मा को प्रिय लगती है वह भी सत्य हो सकती है। स्वामी जी ने चार वेदों के उपवेदों की चर्चा कर बताया कि आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व वेद आदि उपवेद हैं। हमें वेदों का नित्य प्रति स्वाध्याय करना चाहिये। स्वामी जी ने ज्योतिष की चर्चा कर खगोल ज्योतिष को उपयोगी बताया और फलित ज्योतिष का खण्डन किया। अपने व्याख्यान को विराम देते हुए उन्होंने कहा कि हमें ग्रहों के प्रभाव से नहीं अपितु अपने कर्मों से सुख व दुःखों की प्राप्ति होती है।

**प्रस्तुतकर्ता--मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः 9412985121**